

२ श्री ३ द क न का ली म - प्र नो म ।

विलो नि वीह

श्रीसुंदरनाम

श्रीसुंदरनाम

श्री श्री

स्तुतिश्रीसर्वापमात्रोत्पदिरात्रभारासामर्थ ६६६६

स्तुतिश्रीगिरिराजचक्रचूडामनिविदिधविरुदावसिविना
जमानमानोनतश्रीमन्मोहाराजाधिराजकसोरुका २६२६

मनः ५ स्थान ॥ नाम यूष्म यूनूय कं प्रस्थान ॥ विद्यास्थान ॥
६१४ वे नाम खंडु कु २ कादि माने क्रु २ ॥ वृहस्यवात्रथक
सुन छदि १४ मातावनस ॥ रारा रा क शमृ २ ॥ मि वि कनी २
१२ व वानि २ ॥ क २ ॥ २ ॥ २ ॥

आशापत्रक

ASHA ARCHIVE S

29/4

ASHA ARCHIVES

ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ श्री कालिकायै नमः ॥ श्री शिव उवाच ॥
कथितं यं महासुखं सर्वसुखं लभामासुः शयमासाद्य मया प्राफमैव
र्यपदमूलं ॥ सर्वेषु पत्रया एका यथा कं विधिना त्वाना कुरुता
मर्चनं देवा भुक्ता विविदिगीषया ॥ श्री पत्राय नमः उवाच ॥ ये सत्रा
यदि भद्रे वपत्रमेषा पुनातन ॥ न हस्यं पत्रया देव्याः कृपया कथ
य प्रहो ॥ विना नृनं विना होमं विना न्यासं विना वलिं ॥ विना गन्धं वि
ना पुष्पं विना निष्ठादिना क्रियां ॥ प्राप्ता मया मं विना नृनं विना नृनं वि

॥ अथ नृनं ॥ विना जायं विना दानं कनकाक्षिप्रसीदति ॥ श्री शिव उवाच ॥
पृष्ठं स्वधादितं प्राहृष्टं गुर्वं ससुदृढं ॥ एका नामपि एकाक्षि त्वं
वृत्ता धयिष्यसि देवी दानं वकीटि घ्नीं लीलया नृधि नृपियां ॥ सदा सा
उषिया मूर्ध्ना काम को तु कला लसां ॥ सर्व दानं ददया मासु वा सक
मानसां ॥ माक्षी कमत्स्य मां सान्नं नागिनी नृधि नृपियां ॥ अथ नृवा
सि ॥ नीयता गरी नृत्तं लमुहो हवीं ॥ या गय लं यागिनी अं यागी तु दद
हितां ॥ ताम्रय कालिका नाम प्रसीदय नृम हतिता स्याः ॥ सा उवाच ॥ महापू

स्वयं काली प्रकाशितं ॥ तव तत्त्वथयिष्यामि धृत्वा वत्सा वध नय ॥ ग
पनीयं प्रलै नय ० नीयं यनात्य नं ॥ यस्य क काल प ० नात् सर्वविघ्ना
४ समा कूला ४ नय निद ह न दी क पत झरू व से र्व ४ ॥ गद्य पद्य
मयी वानी तस्य गंग प्रवाह व ॥ तस्य दर्शन मातुं न वादिनामि पु
सा मता ॥ राजा नायि सदा सत्यं तज्जलिकि पत्र ज नान् ॥ तस्य हस्त
सद वासि सर्व सिद्धिर्न संशय ॥ निधीय मूक कं ४ मु नय ४ कि
ह माहित ४ मनसा चिन्तयत्वा सीं महा कालं नलासितं ॥ प ० त

ह पुना मारयं स्मृतं भा क सु सा धनं ॥ प्रहना कालि का तस्य पूर्य त्वना
नू क मयते ॥ यथा वत्साम नै र्व भू कू सु मे ४ पूजिता सु ग ४ प्रसीदति
तथा नै न सदा काली प्रसीदति ॥ अस्मिन् दक्षिण काली स्मृत्य मरु
काल ह न व म वि न नू र्द पु न्द ४ म ४ न कालि का द व ता ध मर्थ
काम मो दार्थ पा ० विनियोग ४ ॥ पुं न म ४ श्री ३ कालि का यै ॥ पुं ४ म ४ म
न कालि का काली तड काली कपालिनी गुह्य काली महा काली क
रु काला विनायिनी ॥ कालि का काल नाति ४ म हा काल नित चिनी ॥

कालहेनवसेवावकुलवत्सपकाठिनी॥ कामदाकामिनीकाम्याकम
नीयष्टयहाविनी॥ कस्तूरीनसनीलाङ्गीकृष्णसुखनगमिनी॥ कका
नवर्गसुर्वाङ्गीकामिनीकामसुन्दरी॥ कामालीकामनूपावकामध
नू४कृपावतीकौमारीकुलजाकृष्णकृष्णदहाकृष्णदनी॥ कृष्णङ्गी
कुलङ्गङ्गीचण्डिकासीकमलाकला॥ कान्तीकालखनूपावकामारणा
कुलपालिनी॥ कलिनाकुलवैष्णवोदम्भदम्भहिनामिनी॥ कनालास्या
कनालीवकुलकान्तापनाकिता॥ उग्रउग्रप्रतापीकाविपुलिमहा
त्मना॥ नीलाघनावलाकावमागामुद्रामिताहिता॥ वाक्कीनानायगीर

जासुरजाहकवत्सला॥ माहृष्टनीचरासुक्तावागहीनानसिंहिका
। वङ्गाङ्गीवज्रकंकोलानृमुमुखाविनीमिवा॥ मालिनीवनमृन्माली
गजउकविहृषभाचकाचन्दनशिकोङ्गीसिन्दूरानमस्तुका॥
धाननूपाधानदंष्ट्राधानाधाननानाशुला॥ महादंष्ट्रामहामाया
सुन्दरीयगदन्तुना॥ सुलाचनाविनूपाकीविष्मलाकीजिह्वावनी॥
भगवदनुप्रसन्नोत्पलानृनमनाम्बुजकमभरदहास्यप्रसन्नोत्पलानृ
नवकुलहाविनी॥ प्रसन्नापमवदनास्मितास्याधियहाविनी॥ का

रना की कलुषा मही वरु लविनी। हसती कुसति धनु वरु
मनुति वगिनी॥ प्रवन्धु वरु का वरु वरु वरु वरु गिनी। हके
भी मूक कभी वदी र्व के भी मही एक वी॥ पुत दहा कर्म पूरा पुतण
भी मूमेखला। पुता सनापि य पुता पुत ह मि कला लया॥ मम नवा
हिनी प्रम्व प्रम्व शक लय गिता। प्रम्व लया प्रम्व दहा प्रम्व ली का
वपावनी॥ पुता पवित्रा य न मा पूरा प्रम्व विरु व म। प्रम्व नानी
तीति हना वन दारव कु क्षनिनी॥ नृ मृगु हला शी वरु वरु नमला

रनासिका। दकि मम मला मम मा मला पीना नत कनी॥ दिगन्त्रा
धाना वाह का का नका वाहिनी। धाना वाहि वाह म विरु म
दना तु ना॥ मला पुमला पुमदा लुका सिन्धु निवाहिनी॥ अति मला म
हामला सुर्वा कर्षा का निनी॥ गीत प्रिया वाद्य नता पुत नृ लय पनाय
म। वरु वरु दहा पुका अष्टा दहा पुका तथ का लया नी जगन्माता ज
गती पुन मम नी। जगन्मन्त्र गे के जगती जगदानन्द का निनी॥ जगती व
मति हेम वती माया महामही। नाना यती पवित्रा मी नागिनी नाग

पाणिनी॥ नागकैला वृत्रगौ की गन्धर्वी किं न नश्यती॥ माह नागिर्महा
नागिर्दात्रमहासूत्रं नश्यती॥ विशाधनी वसुमती यद्विनीयागिनी कमा
। नाकसी जाकिनी वेदा वेदमाता वेदहृषमा नीतिः सुनीतिः सुत्रविमु
ष्टिः प्रष्टिर्द्रुति कमा॥ वाणी वृद्धिर्महासूक्ष्मी लक्ष्मी नीलसनेत्यती॥ स्वा
तस्यती सनेत्यती मातङ्गी विजया ऊया॥ नदी सिन्धुः सर्वमाता तानां
न्यनिवासिनी॥ शुद्धात नंगिनी मध्या लाकिनी वेदरूपिणी॥ स्त्रिलसूक्ष्मा
सूक्ष्मा तानां गवत्यनूरूपिणी॥ यत्र मार्गस्य रूपो वविद्या नन्दस्य रूपि
णी॥ सदानन्दमयी सत्या सर्वानन्दस्य रूपिणी॥ सुनन्ता नन्तिनी मुख्या सु

वनी यस्य रूपिणी॥ नंकिनी जंकिनी विजविजविजविज रूपिणी॥ पद्मा
पद्मा लया पद्ममुखी पद्मविक्रममाहाकिनी भूमकिनी भूमको ना
किनी रूपि रूपिया॥ जाकिर्हवीनी रूपा नीमृजानी शाकुमर्दिनी॥ उप
द्रोमी महर्भानी आसा यन्दस्य रूपिणी॥ सूर्यात्मिका रूद्रपत्नी श्रीडी
मृग्य कृतिः प्रमान्॥ शाकिः सुकिमती माता पुकिमकी प्रतिवृता॥
सर्वं नश्यती सर्वमाता सर्वानी रूद्रवत्सला॥ सर्वसिद्धिदा सिद्धिर्हः
वाला वातयापहा॥ कर्ली रुली पालयनी सर्वनीतामसी दया॥ तमिध्मा
तामसी सुर्मः किनाधीनातपस्विनी॥ वावर्झी यश्च नाली लाकि कावा

नृपतिनी॥ अयाग्यावर्त्तनी लङ्का विलङ्का की लङ्कावती॥ स न ह्यती धर्मति
॥ ४॥ अतिष्ठ न नादिनी॥ गतिष्ठादृष्ट सं ह की विमिष्ट ॥ यसीष्ट
माती मानं तं यान का ती मानादिनीति ॥ प्रतावति॥ वागीध्वनी गु
यमिना मं गं क कृ य रं ॥ प्रिया॥ असमथं विनि लया नातिनी ॥ ४॥
त न ह्यनी॥ क ल कं टी क म् क न्नी व न्नी वी म् य ना य नां मा वा सि ना
व न्नी वी ल्हा वा ती जि ऊ ग दी ध्वनी॥ मधूमाती क न्नी ली नी स द्वि
सिद्धि शुचि सिता नं ॥ ४॥ र्वणी र ती नामा नाहि नी न व ती मद्या॥

रं खिनी व कि सी कृष्ण गदिनी पमिनी तथा॥ ४॥ लिनी पत्रिद्या मुव
या छिनी वृक्ष यालिनी॥ पिना क धा निनी वृष्ठा स न ती ती म मा लि
नी॥ नथिनी सम न्नी यी ता वं गिनी न न प धि ते॥ ऊ ठिनी वृद्धि नी नी
ला ला व न्नी वृद्धि व न्नी क॥ व लि पि या स द पृष्ठा य न्नी द ह्य न्नी
मा यिनी॥ महिषा स न्नी सं ह की वा सि नी न क द न्ति नी॥ न क या न्नी
वि न्नी क॥ न क र्व य न्नी ह स्ति नी॥ न क पि या मा स न्नी वि ना स वा
स क मा न सा॥ ग ल्हा नि त म् न्नी ली न्नी मा ला वि ल्हा ष मा॥ ४॥

वासनाविता न कलमा रुही वृषवाहिनी। वाघुत्वगचरी वीना थलिनी
 सिंहवाहिनी॥ कामदेवी म हा देवी गेनी सर्वस्य ताविनी। बालिकात
 रूही वृक्षो वृक्षमाता जनकना॥ संपूर्ण विनासिनी वृषवादिनी वृष
 मीमांसा। हावणी विगुलषा लोपामुद्रा सुनं वृषनी॥ अमाद्या नृन्
 तीती क्लो रोग वल्यन नागिनी। मन्दाकिनी मन्दहासा द्रोणा म
 स्थसु ना न क को॥ मानदा मानवी मान्या माननी यामदा ह ना।
 मदि रामदेवी मादा मध्यासा पलादिनी॥ सुमध्या न न गुनि

शु४

नी सर्वला को रुमा रुमा। जयदा तिल राऊ जी जय धी जय भलि
 नी॥ सुखदा शु रदा सत्या सहा संको रुका निनी। शिवदूती हतमती
 विहृति कूष भनना॥ कोमा। नी कूल जा कूनी कूलमी कूलया सिनी।
 कीर्तिर्य भवती रुषा रुषा रुता पतिपिया॥ सगुम्भनि गुंभ वृष्टानि
 ष्टा कोष्टा पुतिस्त्रिता। धनिष्टा धनदा धन्या वसुधा संपुका सिनी॥
 उर्वी गुर्वी गु रूष्टा सगुम्भनि गुंभ ल को॥ महाकाली नानी ४ का
 मास कामा कामजी विनी॥ कामदेव कला कामाहि रामा शिवने

रुकी। चिकामनिक लुपता जायती दीन व झुला॥ कीर्तिका कर्तिका क
ला अया धा विषमा समा। समनु मर्तो भी प्रमृष्टा दिनी कृष्णनाशि
नी॥ ॐ सा वृज ननी प्रष्टानि मां स मरु नृपिणी॥ तला श्री निम्न ऊ० रा
भुक् मां साहि माहिनी॥ अरुवती मधु ना द्रु या ॐ सा वृ पावनी ॐ
नी॥ य का य कानि का मूर्ति स नही ली मना दिनी॥ कर्म की म क्री
व सर्व संभा ह का निनी॥ उद्धत जल्विनी कुना म हा न जल्विनी तथा॥ अ
द्वेता लो गिनी प्रजा स नही सर्व म झुला॥ सर्व प्रिय क्री ली सा धा नि

भी पिष्टिता सना॥ लय क्री पाय हा। नी निष्क रक्ष वरु म नी॥ अरु म कें
लु वृ वन्दु के ला निर्वी शी वा यू वं गिनी॥ स ह म सूर्य संका म वन्दु कीः
टि स म पु ला। वक्रि म धु ल म धा ला स र्व स ल्वे पु ति क्ति ता॥ सर्वा चा न्व
ती स र्व दै व कन्या गि दै वता॥ द दै कन्या द दै य ला ना गिनी इ र्ज वा निनी॥
ॐ श्री प्र ष्ठा वि ली नी नी स कीर्ति वृ म् नृ पिनी॥ न म्हा नृ य गु ना का म जाय
नी सर्व म कृ द्रु॥ मन ल्विनी वंद मा ता य हा ली वृ म् वा निनी॥ सिद्धि दा म
द्धि दा वृ द्धि सर्व थ म सर्व दा यिनी॥ नृ म धि नृ पिनी ल्ध या मू ला धा न नि वा

सिनी॥ जलपापपूरुमना चन्द्रमूरया चकन्तिनी वावडू का निमनाहि॥
 सखा सखा दृढवता॥ अची कि की दलुनीति मुयिपिदिव सुन्दरी॥ कलि
 नी कालिनी जे लातनया विन्ध वासिनी॥ अमया खेव नी धेया तुनी
 या विमला गुला॥ पगला वानूनी कोया ममिनी विसू रिझिनी॥ उ
 कि हिदि॥ सदाया की प्रकाशा महिमानि सा॥ ॐ कसिद्धि धर्मि लाव
 ॐ गि लोडु नि वासिनी॥ लघि मार्च वगभयणी सावित्री पुवनध्वनी॥
 मनोहरा विता देवा देव्युदनामता नमा॥ पिङ्गला कपिला किलीन

४४३

सल्ल प्रसिका नसा॥ सुषमाया यागनी नतिगन्धनी चरन्ति कापाधः
 लीरुक्मिनी नाध नाध लामाधि कात्रिका॥ अमृता गुल्लिणी वन्द्या
 कटली कंठकं ध्वनी॥ उग्रचक्रुनी वीमाऊननी वी नसुन्दरी॥ उग्र
 ता नाऊ हसदाखा देव की देव लाविता॥ निरञ्जना विता देवी काधि
 नी कुरुदीपिका॥ कुरुवागी ध्वनी काला माह काया विनी डवा॥ याग
 ध्वनी महामात्री जामनी विन्दु रपिनी इती पाणध्वनी गुफा वरुणाज
 मनी पुला॥ कृष्ण कालानिनी श्रद्धा उरु प्रकटाति धिधा डविनी ग

३

प्रिणीयामा काम वीर्यवती यथा ॥ अथ कुरु नीका कनका मूला लालिनी
रुमा ॥ अथ या वि कुमा कु ना सं कुरु नी ला वि कु मा ॥ सु सि धी ह य व हा
प्रि ति नू का सु ग वि नू द्या ॥ त य नी ता प नी वि ष्य हा ग दा धा वि नी
ध ना ॥ वि वि ष्य अ धि नी वं ष्य सु क ला ॥ द नू पि नी ॥ वी ऊ नू या म हा
मू डा वं षि नी या ग नू पि नी ॥ अ नू नू क सु मा न अ म ख ला नू नू पि
नी ॥ अ नू नू म दू ना नू नू नू खान नू कू ला ॥ अ नू नू मा लि
नी का म ष्य नी स र्वार्थ सा धि का ॥ स र्व म नु म यि म धा व नू म न

नू नू पि नी ॥ व ऊ ष्य नी व ध वि नी स र्व दं द क यं क नी ष उ नू य व ती या
ग य का का ला सु मा लि नी ॥ इ ना ष या इ ना धा ना इ र्ज या इ र्ज नू पि
नी ॥ इ न ना इ र्ज क ति ह ना इ र्ज या इ र ति कु मा ॥ हं स ष्य नी वि का ल
अ क म्हा र्था नू क म्पि नी ॥ वि का म नि ल या नि ला प न मा ह न नं डि ता ॥
म हा वि श्व ष्य नी ॥ य ता ह नू नू कू ल सु न्द नी ॥ ल वि ता रु कि स र्ग का ह
का व ष्य स ना न नी ॥ ह का न न्द म या ह का ल वि ता ह का सु न्द नी ॥ स र्व सो
नू र्ण नि ल या स र्व सो ला य अ लि नी ॥ स र्व स र्व अ ग र व ना स र्व

होखनि नृपिनी॥ कुमारी पूजन रागा कुमारी वक्त्रवा निनी॥ कुमारी र
क सुखिनी कुमारी नृप धा निनी॥ कुमारी जय क पीति कुमारी प्रीत
दृष्टिया॥ कुमारी से वक्त्र सङ्गा कुमारी से व को लया॥ आनन्द रहे न
वी वी राहे नवी व दू के रहे नवी॥ मम मम न रहे नवी को ल रहे नवी पू न रहे
नवी॥ महा रहे नव पत्नी यय नमान नन्द रहे नवी॥ सुनो नन्द रहे नवी य
उन्म लाने नन्द रहे नवी॥ मूकान नन्द रहे नवी यज्ज मूकान नन्द रहे नवी॥ फ्ला
नानन्द रहे नवी यज्ज मूकान नन्द रहे नवी महा रह यङ्क नीनी कुनी पु

व गमत पत्निनी॥ प्रिय राय नम ममनी सुन्दरी पून सुन्दरी प्रिय नभीप
अदभी प मी पून वा सिनी॥ महा सुफदभी व वषा ङभी प्रिय न सु
न्दरी॥ महा कुहास्य नृपा व वक्त्रभी व स नखती॥ नव वक्त्र के व नी व
के व नी प्रिय हैं नमालिनी॥ राज राज व नी धा नम ल प्रिय न सु
न्दरी॥ सिन्दूर पून नृविनाभी मं प्रिय न सुन्दरी॥ सर्वांग सुन्दरी न
का न के व लो लनी यनी॥ यवा जो व क सिन्दूर न के वन्दन नृप धृ क
यवा या व क सिन्दूर न के वन्दन धा निनी॥ वामीनी वी ल क टि ला ति

मर्मलाऽधमकंशिनी। नत्नमोकि कनलाद्याकि नीटमकटा कला॥ नत्नकू
मुलसंयकसु नगमुमनानमा। कृष्णसेधनकृष्णकामको नंदित
नाहिका॥ मूकाविद्रुममासिबहा राटीरुनममुला। सूर्यकानन्द
कोनोयस्यर्धकृमुलद्विषमा॥ वीजपूनेरु नदीजदन्तपकि नने
हमा। कामकोदमु कोरुगनप्रकृष्टदीपवर्षिनी॥ मातङ्गकृष्णवर्द्धो
जालसत्को कनदेकमा मनीरु सष्वली कर्णहंसी गतिविठमिः
नी॥ यमरागं गदशामध्यगुष्क नयकाशिनी। नानामनिपतिरु

र्यरुद्रकाश्चनकंकमा॥ नागनु नत्ननिर्मास वलयाचितपानि
नी। पद्माम्बरपरीधाना कलमञ्जरी नरञ्जिता॥ कर्णनागुत्रकसु
नी कूटमा उपलपिता। विविधनत्ने पृथकी कल्पधाम्बितनस्मि
ता॥ नत्नेदीयासु नदत्तेहिं हासननिवासिनी॥ षड्बुद्धदन्तकनी
पनमानन्दरूपिणी॥ सहस्रदलपद्मान्ध्रन्युममुलवकिनी। वक्त्र
विष्णुगिर्वक्त्रोऽनानामुखनिवासिनी॥ हनविष्णुविनिष्क्रीडग्रह
नायकवर्द्धता। आत्मयानिर्बुद्धयानिर्गुणयानि नयानिजा॥ एण

१४२ महाकाली सहस्रनाम

१४२

जप या सै रत्न निर्विघ्न सुखि

ASHA ARCHIVES

साम्प्रदायिक	29	74	
--------------	----	----	--

श्रीदुर्गासहाय

स्वस्ति श्री ३ कालि कार्ये नमः ॥ सर्वत ५१४ माघ कृष्ण
वा नवें अथ कृष्ण वाया हल पूरवा हा लया धन वि
नसिने वाया स्वथया लाया धन सिंघात विया ४३ हं ॥
१ संवत् ५१४ माघ कृष्ण १३ शुक्र वा नथ कृष्ण श्री ३
मंथु ये मि मा हा द व या क श्री २ न न वा इ मा हा वा आ
न उा हा या मू क न उा दि न श या ४॥

नृपाह गच्छाति त्रिगिनी ह गवाहिनी॥ ह गमिका ह गधारा नृपि
नी ह गमाहिनी॥ लिङ्गे हि धारिणी लिङ्गे हवानी लिङ्गे वाहिनी॥
~~लिङ्गे~~ लिङ्गे लिङ्गे नी लिङ्गे नृपिनी लिङ्गे सुन्दरी॥ लिङ्गे लिङ्गे
किनी लिङ्गे प्रिया लिङ्गे सकां किनी॥ शिवो वासुदेवो नृपा नी शिवो
शिवनादिनी॥ मातङ्गी जामनी माता मार्तवी नृप मेखला॥ ता
किनी यागिनी वैवर्तथायागत संमुता॥ माहृष्यी वैष्णवी चः
जामनी शिव नृपिनी॥ अलं मखा वंगवती कौटि नृपा सुमेखला

तमन्मरीगऊऊि का वंजये वधु हकनी ॥ पिङ्गला वक्क दूती
 वसुमाये वगन्धिनी ॥ लिङ्गला ये वलिङ्ग धीप्रियू नाहे नवीतथ
 ॥ लिङ्गला लिङ्गनीती वलिङ्ग गीतसुथे वच ॥ लिङ्गमाला लिङ्ग लग्न
 लिङ्ग लिङ्गी वपावती ॥ लग्नवती कीर्तिकी वपुमाये वप्रियं वदा ॥
 गन्धी भगि वदूपाये वकंशी वक्रूपधूकू ॥ लिङ्ग गीतिर्महा
 यीति हृगगीतिः सदा नतिः ॥ लिङ्ग नाम सदा नदा लग्न नाम यदा
 नतिः ॥ लिङ्गमाला के छह षा लग्नमाला विहृषभा ॥ लग्नलिः

[illegible]

यं तु कृत्स्नमानन्दलहरीलिङ्गदहिनी॥ स्वयं तु कृत्स्नमानाद्या
 यं तु कृत्स्नमानना॥ स्वयं तु यूपयनिलया स्वयं तु यूपयवासिनी॥
 यं तु कृत्स्नमानलिङ्गदहिनी॥ स्वयं तु कृत्स्नमानाद्या॥ स्वयं तु यूपयका
 स्वयं तु यूपयमासिका॥ स्वयं तु कृत्स्नमानाद्या स्वयं तु कृत्स्नमानपु
 स्वयं तु कृत्स्नमानाद्या स्वयं तु कृत्स्नमानवता॥ स्वयं तु कृत्स्नमाना
 स्वयं तु यूपयरागिनी॥ स्वयं तु कृत्स्नमानाद्या स्वयं तु यूपयवर्षिणी॥
 स्वयं तु कृत्स्नमानाद्या स्वयं तु यूपयपुष्पिणी॥ स्वयं तु कृत्स्नमानाद्या

स्वयं तु यथा रूपाणि ॥ स्वयं तु कसुमा न्यादा स्वयं तु यथा सुदनी ॥
 स्वयं तु कानागि ॥ स्वयं तु कसुमा हृवा ॥ स्वयं तु कसुमवयवा
 स्वयं तु यथा पूर्णा ॥ स्वयं तु यथा कपला स्वयं तु हाहा माहाका ॥
 स्वयं तु दधिनक्षत्री स्वयं तु हकिता विता ॥ स्वयं तु यथा कयसा ॥
 स्वयं तु यथा कपिया ॥ स्वयं तु वन्दका धारा स्वयं तु ब्रह्म कानिका ॥
 स्वयं तु यथा सर्व स्वयं तु यथा युक्तिनी ॥ स्वयं तु यथा सस्मना स्व
 यं तु यथा वीतिनी ॥ सर्व का लाह वयीता सर्व का लाह वानि

हुवा

का॥ सर्वका साहवात्मिकों॥ सर्वका साहवाहवा। कृष्णपूष
सदाशीतिलसपूषसदाशिति॥ कृष्णसोहवपीताकृ
ष्णसोहवान्मिका। स्वयं उवाचिवाधाजीपावनी लोकपावनी
॥ कीर्तिर्यमहिनीमधविमधशुकसुकसुन्दरी। सुखदा
माकृदाभाश्चमाकेदात्मपकाशिनी॥ शुकाधनाशुकनया
शुकसिन्धुनिवासिनी॥ शुकासयाशुलीगमीशुकपूजासदान
ति॥ शुकपूजाशुकहामासंकुष्टाशुकवत्सला। शुकमूर्ति॥

शुक्रकनीशुक्रपूजकपूरिका॥ शुक्रस्त्राशुक्रिनीशुक्रमह्यहाशु
कसुन्दरी॥ शुक्रलानाशुक्रदहाशुक्रदुष्टागिशुक्रिनी॥ महाशुक्रा
शुक्रतवाशुक्रवृष्टिर्विधायिनी॥ शुक्रारिधयाशुक्रार्हाशुक्रसुन्द
नवदिना॥ शुक्राननकनीशुक्रसदानादविधायिनी॥ शुक्रास
वासदाशुक्रपूर्यशुक्रमनोरमा॥ शुक्रपूजकसर्वस्वाशुक्रनि
न्दकनासिंशिनी॥ शुक्रात्मिकाशुक्रयत्नेशुक्रकर्षशकोनिनी॥
सानदासाधकपाशसाधकाशकमानसासाधकानन्दसंताषा-

साधकात्रिविनाशिनी॥ साधकोरुमसर्वस्वासाधकानकनग्या॥
आत्मविद्यावक्त्रविद्यापत्रवक्त्रकदुम्बिनी॥ शिकूटस्त्रायशुक्र
दासर्वकूटशरीत्रिनी॥ सर्ववर्गमयीवर्गजयमासाविधायिनी
॥ ॐ तिथी कालिकानामांसहस्रशक्तिराषिर्ग॥ श्रीशिवउवाच॥ ॐ ॥
शुक्राशुक्रतत्रहासामालयातकनीशनापूजाकोलनिमीथव
सन्ध्यायात्रयानपि॥ ललनगमनपत्यसय४५॥ ० साधकोरुम
४१५४५० त्या० यवोपिंदापि॥ लभतिशुभवयदपि॥ सर्वपाप

कोकवधवा ३

विनिर्मुक्तः स्यात्तिकाति कोपदं। सुद्वयाधुद्वयावापियत्कश्चि
त्मानवः प० त्॥ इग्मर्द्गर्जत नमीत्वा देवाः याव्यवनीरवत।
वन्धवौ मृतवतून् सावयाङ्गमा॥ ध्रुवास्तुमिदं यूपलहते
चिन्तीविनः। यं यं कामयत कामं य० स्तामनूहर्म॥ द
वीवनप्रसादनतं तं प्राप्तिनित्यं। स्वयं युक्कसुमे०
के० सुसन्धिकुसुमान्वितं॥ यवायावकसिन्दूरनकचन्द
नसंयुतं॥ सकमासादिरिचीनमधुरि० सापिपायसे॥

रुकोपनीतेर्मनुमसाधितं० सन्किरि० सह० पक्ष्मयवाने
नेवद्यैर्बलिरिब्रह्मनिर्ग० धूपदीपमहादिव्य० पूजयि
त्वा मनोहरं०। उफामहमनूस्तां प० त्॥ तकि सुमन्वित
॥ प्रनेपवता० स्तिनधीमूकाक० हभदिगेम्बन० वाहन
चित्तं तत्क० ममनालयमागतं॥ धून्यालयगतावापि
श्यास्तवागिवात्मक० सतवत्कालिकायूपलूनिखा
तिमूपागतं॥ सर्वविद्यावता० ध्याधनेनचधनाधिप०

[illegible]

धिवर्षसहस्रलोक। वरुकिं कथ्यते तस्याः ४ य० त० ४ सुवमूलमं ४॥
 नकिं विदुर्लोकं यद्यन्मनसि कल्पितं। ब्रह्मणा ह्यनापातं
 सुयं गुर्वङ्गनागमः ४॥ सर्वमाहुतत्रयवस्तुवस्तुस्य पता
 वतः ४ न ऊच्यते सारगं यः ४ ऊफाकासी महामनू ॥ सुर्वना
 तेने संमुख्य साधकः ४ किं न साधयेत्। यत्र दाना यत्र वापि
 मनू ऊफा य० त्सु वं ॥ क्वेन विल्लाद्या जायते मदनाप
 मः ४ अष्टाह नरातं ऊफा यानि मामनुमनु वि०। सङ्गम्य

० नादस्य सर्वविद्यया त्वं ॥ दिगम्बरा मूककं ॥ ४ ॥ अथ हिम
 धूनं नतं ॥ ४ ॥ जहामुत्तमहाकाली खचन जायते विना ॥ ५ ॥ यदि या
 धित्वं संसर्गतिदायनं ॥ ४ ॥ ययत्नं ॥ ४ ॥ समुदायतता जायते नस्य ॥
 सर्वसिद्धयु ॥ ४ ॥ कुलो नमो को लवकु य पूजाय नायन ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
 न कालिको मुत्ता वागी वत्स कवि क्वं ॥ ४ ॥ अलोक यन्ति ग्रयं कवि
 वली पनया धितं ॥ ४ ॥ जहामुत्तं गं वंतीं मिवां ॥ ४ ॥ सर्वपाथे ॥ ४ ॥ यत्रियका
 मानव ॥ ४ ॥ स्यात् ॥ ४ ॥ को यम ॥ ४ ॥ इह यूयं नृ संक्रान्तिवतुर्द ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
 २ महाकाली खचन जायते विना ॥ ४ ॥ सनतं मन्त्रं जहामुत्ता र गवतीं मिवां ॥ २

नवम्यां मङ्गलदिनय ॥ ० ॥ स्नातुं सुसाधक ॥ ४ ॥ लोमा वास्यानिभीथ च चतुष्य
 थगता नत ॥ ४ ॥ मां सरक वसिंदयात्स दग्धं मीन ॥ ४ ॥ नितं ॥ ४ ॥ अलु नमं
 जहामुत्ता मसहस्रकं ॥ ४ ॥ सोदधना तव दा ॥ ४ ॥ देवगन्धर्व सवितं ॥ ४ ॥ यन
 केन प्रकाशनें मी काली तकि यनायनें ॥ ४ ॥ सुमुखे दखिला लोकाना
 स्नानमपि माहय ॥ ४ ॥ अकषयं दवन्त्यां वधाय दपि कं ॥ ४ ॥ ४ ॥ मोनयद
 खिलान्दूषान् द्यादयति ॥ ४ ॥ अनुवाने ॥ ४ ॥ ननु मा ॥ ४ ॥ नमहिषका गम्बक
 ॥ ४ ॥ नितं ॥ ४ ॥ सास्त्रि मां ॥ ४ ॥ समधरि ॥ ४ ॥ सोमृते दूग्धपायसे ॥ ४ ॥ यानि अलि
 तनीय नत गलि ॥ ४ ॥ मृते नय ॥ ४ ॥ ४ ॥ पूजा उपाने च काली संतपसा

धक॥ सहस्रनामतिदि॥ ४० सोतिरकिपनायन॥ मातं वकालिकात
स्य सर्वप्रहितकात्रिणी॥ प० निन्दायन॥ इह पत्रिवादपनायन॥ खः
नायप० ननु नायप० यासाधकायच॥ निवारकायदूषायदूष
कायदूषनात्मना॥ इतिरकिविहीनायप० ननु नायच॥ पूजाउप
विहीनायसूनाम्निन्दकायच॥ ननु वंदयिष्येति संप्रति ननु
हव॥ कूलीनायमह॥ भयदुर्गातिरकि० नायच॥ वैष्णवायविष्णु
यत्कलकायमन्त्रि॥ गान्धर्वानन्दरूपायनिवेदित० नायच॥ द

शास्त्रवमहाकाव्या॥ साधकायतदातया॥ गुरुविष्णुमह॥ नामहर्द
नमह॥ यत्री॥ समुत्तानूरवत्सन्तु॥ मह॥ वना॥ तसं॥ य॥ स॥ क॥ नि
वरका॥ य॥ स॥ व॥ वैष्णवा॥ रु॥ म॥ स॥ पू॥ अ॥ सो॥ ति॥ य॥ का॥ सी॥ म॥ द॥ न॥ रा॥ व॥ वा
व॥ ह॥ न॥ ॥ दे॥ वा॥ न॥ न॥ दे॥ न॥ सा॥ न॥ दे॥ दे॥ वी॥ र॥ क॥ व॥ र॥ कि॥ मा॥ न॥ स॥ व॥ ध॥ न्या॥ यः
त्यार्थ॥ मह॥ भ॥ व॥ य॥ मान॥ स॥ का॥ म॥ यि॥ त्वा॥ य॥ थ॥ का॥ म॥ सु॥ व॥ म॥ न॥ म॥ दी
न॥ य॥ ॥ स॥ र्व॥ ना॥ ले॥ प॥ त्रि॥ लु॥ क॥ जा॥ य॥ न॥ म॥ द॥ ना॥ य॥ म॥ च॥ कुं॥ वा॥ सु॥ व॥ म॥
न॥ वा॥ ध॥ न॥ य॥ द॥ स॥ स॥ न॥ ॥ वि॥ लि॥ ख॥ वि॥ धि॥ व॥ त्सा॥ ध॥ स॥ व॥ का॥ लि॥ काः

तनू॥४॥ दधो निवदिनयधरुलुत्तंरुदयत्तन॥ दिव्यदहधशालु
 दवा॥४॥ या॥४॥ यत्राहव॥७॥ नैवयनिन्दकैदृक्कानृत्यनियानिनीगम॥
 नकायानाशनासर्वमांसास्तिवर्षस्मयता॥८॥ तस्मान्निवदिनंदवोद
 लो॥४॥ लो॥४॥ तुमानवधननिन्दन्मनसावाचासर्वबाधियनाश्रुत्व॥
 ओत्मानं कालिकात्मानं तावयत्सोतिमानवधशिषोपमंगु रूक्षात्
 सजवेष्टीसदाशिव॥४॥ यस्यानयनिष्ठतिनूनमनतत्साग्रंरवयो
 लिखितंविधिस्तु॥४॥ एतत्तत्तलकककृदूमाकककृत्तसिन्दुनमध

दधम॥४॥ नतप्रवोत्स्यहयंनद॥४॥ मितानथना॥४॥ निवद्विहीति॥४॥ उत्था
 टवायात्रयिनाप्रमक्षलक्ष्मी॥४॥ स्वयंनप्रवसदलोत्ता॥४॥ साग्रं॥४॥ नेतद
 नेकपूष्पंकोलीपदाम्नाउपनामनूष्य॥४॥ विधानपूजाहसमेवसंम्य
 याप्नातिसम्पूष्ममनात्रथसो॥४॥ मूका॥४॥ चनमननोमनविन्दविनया॥
 सृज्जमिनोहोमिनोवक्रोयेनुशिवात्मकार्चनमुखीसाकपिसंलक्षित॥
 धीमच्छुक्कनरुकिपूर्वकमहाकोलीपदध्यापितामुकिर्दुकिमतीत्य
 यंतुनियराउकिकन॥४॥ स्थापिनी॥ ॥०॥ तिष्ठाकालीकलसर्वस्वशि

वपनमृगामसम्बादधीमहाकात्या॥ सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥
साधसंभृतं १४४॥ के संभृतं १०१३ विक्रमसंभृतं १८३० मितिः
माघकृष्ण १० त्राज ३ संपूर्ण ४३ हंस ॥ ॥ ॥ ॥

कुरुं कुरुं मंचैव मृगनामिस्तु रक्तचन्दनं ही वेलं च समायुक्तं स्व
पंभूकस्तु मे परि ॥ स्वपंभूकस्तु मस्तने रमाहिंकारं संहितायचोउ
नासते हस्तपद्मे वानवा न्येन च पूष्यकैः ॥ नचन्दनैः मृत्तिका

वाजसंक्षान्तकारय ॥ लाक्षारक्तचन्दनकूक्षितसिंदूरिजोमयच
तुल्यमकलसितधाविलोक्यगुहिकाकृत्वा जपसंख्यानुकार
ये ॥ जपसख्यायागुहिकादयं कहे ॥ लाक्षारक्तचन्दनकूक्षि
तसिंदूरजोमयचतुस्मसकलसितधाविलोक्यगु
हिकाकृत्वा जपसंख्यानुकारयेत् ॥ महासहितास
त्रौ ॥



